भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | **मई** 2001 | **अंक** 5

क्या आर्य बाहर से आये थे ?

डेविड फ्रॉली पश्चिम के कुछ उन चुने हुए वेदाचार्यों में हैं जिनकी वेदों के प्रबुद्ध अध्येता के रूप में भारत में प्रतिष्ठा है। उनके अध्ययन का मुख्य आधार वेद है तथा उसमें अधुनातन पुरातात्विक अन्वेषणों के आलोक में भारत के प्राचीन इतिहास का तथा वेदों का आलोचनात्मक अध्ययन जुड़ा हुआ है। उनके निम्नलिखित अभिमत आँखें खोलनेवाली हैं। फ्रॉली न्यू मेक्सिको (अमेरिका) में 'अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ वैदिक स्टडीज' में निदेशक हैं।

'आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया' इस सिद्धान्त के अनुसार ईसा के 1500 वर्ष पूर्व वैदिक आर्यों ने, जो जंगली चरवाहे कहे गये हैं, भारत पर आक्रमण किया। यह सिद्धान्त भारत की पुस्तकों में मान्यता प्राप्त है। उन्होंने इस महाद्वीप की उन्नतिशील सभ्यता को, जिसे द्रविड़-सभ्यता कहा जाता है, समाप्त कर दिया। इसका प्रमाण हड़प्पा तथा सिन्धुघाटी के पुरातात्विक अवशेषों से प्राप्त होता है। यह सिद्धान्त भारत की प्राचीन सभ्यता के सर्वथा विपरीत है। यथार्थत: आर्य भारत के मूल निवासी थे, अत: आर्य-सभ्यता भारत की मूल सभ्यता है। यह सभ्यता पौराणिक सरस्वती नदी के किनारे पनपी जो दिल्ली के पश्चिम में बहती थी और उस प्राचीन सभ्यता को विकसित करने में ऋषियों, मनीषियों और योगियों के हाथ थे।

आर्यों के आक्रमण-सिद्धान्त का आविष्कार उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोपी विद्वानों ने किया। इसकी पृष्ठभूमि में साम्राज्यवादी तथा ईसाइयत मानसिकता ने काम किया। उस समय भी इस सिद्धान्त का विरोध भारतीय मनीषियों ने जैसे स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक और स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया। वेदों में कहीं भी आर्यों का भारत के बाहर से आगमन का उल्लेख नहीं है। इसके बावजूद चूँकि शिक्षा-जगत में पश्चिमी विद्वानों का आधिपत्य था तथा विश्व के अनेक देशों पर यूरोप के कुछ देशों का प्रभुत्व था, अत: भारत पर आर्यों की आक्रमणवाली धारणा सत्य मानी जाने लगी। इसने प्राचीन भारतीय इतिहास को सिर्फ आक्रमण की घटना के रूप में चित्रित कर इसका अवमूल्यन किया तथा बाद की पीढ़ियों ने अज्ञान के कारण

आर्यों के आक्रमण-सिद्धान्त को चुनौती

—डॉ० डेविड फ्रॉली

हाल के पुरातात्विक अवशेषों के अन्वेषण से जो निकर्ष निकला है उससे सुस्पष्ट है कि आर्यों का भारत पर आक्रमण तथ्यों पर आधारित नहीं, कल्पनाप्रसूत अथवा घटनाक्रमों को तोड़-मरोड़कर निकाला गया है। उदाहरण के तौर पर आक्रमण के सिद्धान्त के अनुसार आर्यों ने द्रविड़ों को मार भगाया। लेकिन हड़प्पा की खुदाई में युद्ध के कोई प्रमाण नहीं मिले, अपितु यह पाया गया कि जलवायु तथा नदियों के मार्ग-परिवर्तन के कारण यहाँ के निवासी स्थान छोड़ने को बाध्य हुए। यह कहा जाता रहा है कि आक्रमणकारी आर्य अपने साथ घोड़े लाए। यह भी हड़प्पा की खुदाइयों से गलत सिद्ध हुआ है। इन पुरातात्त्विक सर्वेक्षणों तथा हाल में ही की गई मेहरगढ़ (पाकिस्तान) की खुदाई के अनुसार यह सिद्ध होता है कि यह सभ्यता ईसा के 6500 वर्ष पूर्व से अनवरत चली आ रही है तथा न कोई बाहरी आक्रमण हुआ और न ही कोई एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरण की घटना हुई। कुछ वर्षों में आर्यों के आक्रमण का सिद्धान्त पूर्णत: नकारा जाएगा।

हाल में ही मासिक पत्रिका हिन्दुइज्म टुडे (Hinduism Today दिसम्बर 1994) में एक लेख इस आक्रमण के सिद्धान्त के विरोध में प्रकाशित हुआ। विश्व में हिन्दुओं का यह सबसे ज्यादा प्रकाशित एवं प्रचलित पत्र है। यह पत्र अमेरिका में प्रकाशित होता है तथा पूरे विश्व में वितरित किया जाता है।

इस सिद्धान्त के पक्षधर यह तर्क देते हैं कि यह सिद्धान्त विश्वव्यापी पाठ्य पुस्तकों तथा भारत की पाठ्य पुस्तकों में मान्यता प्राप्त है, अत: नए सिद्धान्त की मान्यता सम्भव नहीं। जो इस सिद्धान्त के विरोधी हैं, उनका कहना है कि चूँकि ये अन्वेषण अभी हाल के ही हैं, अत: पाठ्य-पुस्तकों में स्वीकृत होने में समय लगना स्वाभाविक है। लेकिन इसके बावजूद नए अन्वेष्णों को पाठ्य-पुस्तकों में मान्यता मिलनी शुरू हो गई है।

आश्चर्य की बात है कि इस नई मान्यता का प्रकाशन भारत की किसी पाठ्य पुस्तक में नहीं हुआ, अपितु पाश्चात्य विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तक में हुआ है। सर्वे ऑफ हिन्दुइज्म (Survey of Hinduism, Suny State University of Newyork Press 1994) के हाल के ही संस्करण में प्रो० क्लौस क्लोस्टरमेयर ने आक्रमण के सिद्धान्त पर आपत्ति प्रकट की है। उन्होंने कहा है कि नई गवेषणाओं के बाद जो तथ्य प्रकाश में आए हैं, वे स्थापित सिद्धान्त के विपरीत हैं और प्राचीन भारतीय इतिहास के लिए अनुपयुक्त हैं। सर्वे ऑफ हिन्दुइज्म (Survey of Hinduism) उत्तरी अमेरिका के विश्वविद्यालयों में हिन्दुत्व सम्बन्धी एक प्रमुख पुस्तक है।

प्रो० क्लोस्टरमेयर हिन्दू नहीं हैं, अपितु कैथोलिक ईसाई हैं। उन्होंने अपना मत हिन्दुत्व के पक्ष को पुष्ट करने के लिए नहीं, अपितु एक विद्वान्, मनीषी एवं शिक्षाविद् के नाते व्यक्त किया है। हिन्दुत्व के शिक्षक के नाते उनकी सहानुभूति हिन्दू-धर्म के प्रति होनी स्वाभाविक है, लेकिन वे हिन्दुत्व के प्रवर्तक नहीं माने जा सकते। अपनी पुस्तक में उन्होंने हिन्दू-धर्म की कई मान्यताओं, विश्वासों का खण्डन भी किया है। लेकिन आर्यों के आक्रमण की असहमति नई गवेषणाओं के आधार पर की है।

प्रो० मेयर कहते हैं (पृ० 34) 'नए उत्खनन के आधार पर सिन्धुघाटी की सभ्यता का स्थान

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष भाग
और कालसम्बन्धी अनुमान काफी बदल गया है और इसके चलते वैदिक सभ्यता के कालमान तथा आर्यों के आक्रमण के सिद्धान्त की जड़ ही हिल गई है। अब वैदिक भारत की अवधारणा के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है तथा सिन्धुघाटी की सभ्यता तथा वैदिक संस्कृति के सम्बन्धों पर नए सिरे से गवेषणा की आवश्यकता है। अब यह विश्वास होने लग गया है कि सिन्धुघाटी की सभ्यता वैदिक आर्यों की ही सभ्यता थी, जो दक्षिणी रूस से आए आक्रमणकारी नहीं थे, अपितु ये आर्य हिमालय के मध्य एवं निचले भागों में अनिश्चितकाल से रहते थे।'

प्रो० मेयर वैदिक संस्कृति और सिन्धुघाटी सभ्यता के बीच व्यवधान पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाते हैं और दोनों में साम्य अथवा तारतम्य के पक्षधर हैं। वैज्ञानिक गवेषणाओं के अनुसार सरस्वती नदी ईसा के 1900 वर्ष पूर्व सूख गई थी। यही सरस्वती नदी वैदिक सभ्यता का मूल आधार है। वे लिखते हैं (पृ० ३६) 'मूलर के अनुसार यदि आर्यों का आक्रमण ईसा के 1500 वर्ष पूर्व हुआ तो सूखी हुई नदी के किनारे गाँवों की खोज का कोई मतलब नहीं'।

प्रो० मेयर ने खुदाई में प्राप्त कंकालों के अध्ययन से यह पाया कि जिस जाति या समुदाय के लोग प्राचीन भारत में रहते थे, वे ही जाति और समुदाय के लोग आज भी भारत में हैं, उनमें निरन्तरता है, कहीं क्रमभंग नहीं है। इससे यह परिणाम निकलता है कि प्राचीन भारत में किसी बाहरी जाति का शासन नहीं था। कृष्ण ने गुजरात में ईसा के 1500 साल पूर्व द्वारिका बसाई थी। उसका भी हाल में ही पुरातत्त्वविदों को पता लगा है। वैदिक साहित्य में खगोल का जो विस्तृत वर्णन है, उसके आधार पर भी सिन्धुघाटी की सभ्यता के काल-निर्णय में सहायता मिलती है।

प्रो० मेयर, सुभाष काक के लेखन से काफी प्रभावित हैं और अपनी पुस्तक में यत्र-तत्र उसका उद्धरण भी देते हैं। काक ने वेदों में खगोलीय वर्णन की गुत्थी सुलझाई है। उसका भी हवाला प्रो० मेयर देते हैं। उन्होंने मेरी पुस्तकों गॉड्स सेजेज एण्ड किंग्स (Gods Sages and Kings) तथा वेदिक सीक्रेट्स ऑफ एनसियेन्ट सिवीलीजेशन (Vedic Secrets of Ancient Civilisation) से भी उद्धरण लिये हैं। वे काक की पुस्तक के एक लम्बे अंश को उद्धृत करते हैं। 'ईसा के पूर्व की चौथी सहस्त्राब्दी के मध्य भारोपीय तथा द्रविड़ जाति के लोगों में परस्पर मिले...इसी समय भारोपीय-जाति के लोग यूरोप से बढ़ते-बढ़ते उत्तर भारत तक आ गए होंगे और ठीक इसके निचले हिस्सों में द्रविड़-जाति के लोग रहते थे। सदियों तक दोनों के सम्मिलन से एक नई वैदिक भाषा का जन्म हुआ जो मूल में भारोपीय होते हुए भी द्रविड़-भाषा से प्रभावित थी। वैदिक सभ्यता तथा हड़प्पा-सभ्यता दोनों ही इसी सभ्यता की उपज हैं'।

'ये तथ्य विभिन्न पुरातात्त्विक तथा वैदिक विद्वानों से प्राप्त हुए हैं। ये तथ्य प्रो० क्लोस्टरमेयर के अपने नहीं हैं, लेकिन ये इतने तथ्य से भरे हैं कि पाश्चात्य विद्वान् भी इन्हें नजरअन्दाज नहीं कर सकते। इन्हीं तथ्यों ने प्रो० मेयर को वेदों के पुनर्वीक्षण के लिए बाध्य किया है।' इन प्रथम प्रकाशित तथ्यों से वेदों की पाश्चात्य विद्वानों की व्याख्या प्रभावित हुई है तथा नए शोधों से वैदिक सभ्यता के बारे में और नए तथा चौंकानेवाले तथ्य सामने आएँगे। (पृ० ३८)

इन तथ्यों से भारतीय विद्वान्, लेखक, पुरातत्त्वविद, विज्ञानी तथा आध्यात्मिक नेता प्रभावित हुए हैं, लेकिन अभी तक इन तथ्यों ने पाठ्य-पुस्तकों में स्थान नहीं प्राप्त किया है। प्रश्न है कि नए तथ्यों के प्रकाश में पाश्चात्य देशों की पाठ्य-पुस्तकों में परिवर्तन हो सकता है तो भारत में क्यों नहीं? जबकि इसी तर्क के आधार पर भारतीय संस्कृति और धर्म को बदनाम पर बदनाम किया जाता रहा है। उम्मीद की जाती थी कि ये परिवर्तन भारत की पाठ्य-पुस्तकों में पहले होते, पश्चिम में बाद में। पश्चिम में ग्रीस की सभ्यता के प्राचीन होने की सूचना प्राप्त होते ही वहाँ की सरकार ने इसे तुरन्त ही मान्यता प्रदान की।

दुर्भाग्यवश भारत के कुछ समुदाय इन नई शोधों को, जिससे भारत की प्राचीन गौरवशाली परम्परा का ज्ञान होता है, इसलिए मान्यता प्रदान नहीं करते कि कुछ प्रभावशाली समुदाय इसके कट्टर विरोधी हैं। 'आर्यों के आक्रमण का सिद्धान्त' राजनीतिक स्वार्थ से प्रभावित है तथा भारत में राजनीति पूर्णत: चुनावी स्वार्थों पर आधारित है।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी, वामपंथी विद्वान् तथा राजनीतिज्ञ, द्रविड़ देशभक्त, जातिवाद-विरोधी संस्थाएँ, ईसाई-धर्म-प्रचारक तथा मुसलमान, ये सभी समुदाय 'आर्यों के आक्रमण' वाले सिद्धान्त से भारत को बदनाम करने, खासकर ब्राह्मणों के वर्चस्व की विशेष आलोचना के कट्टर पक्षधर रहे हैं। आज भी उन्होंने ब्राह्मण-विरोध की भावना को इतना अधिक उकसाया है कि दक्षिण भारत की दीवालों पर 'ब्राह्मण मध्य एशिया वापस जाओ' के नारे दिखाई पड़ जाते हैं। दक्षिण में विशेषकर द्रविड़, पिछड़ी-जातियों तथा मुसलमान तीनों मिलकर अपने को आर्यों के आने के पहले रहनेवाली जाति के रूप में मानते हैं तथा उनके दिमाग में यह बात ठूँस-ठूँस कर भर दी गयी है कि वे आर्यों के द्वारा सताए हुए तथा जीते हुए हैं। भारतीय स्वातन्त्र्यसंग्राम के पुरोधा बाल गंगाधर तिलक तथा महर्षि अरविन्द ने इस सिद्धान्त का डटकर विरोध किया। ये लोग प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति के निरन्तर प्रवाह के पक्षधर थे।

वास्तव में इतिहास को तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। अभी जो तथ्य सामने आए हैं, 'आर्यों के आक्रमण' के सिद्धान्त के खिलाफ जाते हैं। आज की घटनाओं के चलते चार हजार साल पुराने इतिहास को विकृत नहीं किया जा सकता। ऐसी भूल केवल भारत में ही सम्भव हो रही है। अब भारत के विद्वानों को 'आक्रमण के सिद्धान्त' का नये दृष्टिकोण से सर्वेक्षण करना चाहिए। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की प्राचीनता और निरन्तरता से भारत की एकता कायम होने में मदद मिलेगी।

यदि यह सिद्धान्त अप्रचलित हो जाता है तो निश्चय ही भारत सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति के रूप में उभरेगा, जिसके पास वेदों के रूप में अनुपम ज्ञान का भण्डार है। यह प्राचीन संस्कृति मिस्र तथा बेबीलोन की प्राचीन संस्कृति से होड़ लेने में सक्षम है और हरेक के लिए यह संस्कृति गर्व का विषय है।

डॉ० फ्रॉली की पुस्तक 'उत्तिष्ठ कौन्तेय' से

पृष्ठ 1 का शेष भाग
उन आक्रमणकारियों को ऋषियों की गलत संज्ञा दे डाली।

हाल के वर्षों में आर्यों द्वारा आक्रमणवाली धारणा को पूर्व और पश्चिम के कुछ विद्वानों ने चुनौती दी। इस सिद्धान्त के विरोधियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है और विरोध अधिक मुखर हो रहा है। हाल के वर्षों में नए-नए पुरातात्विक अन्वेषण हुए, प्राप्त कंकालों के अध्ययन किए गए तथा खगोलीय तथा भूतत्व-विषयक अध्ययन के आधार पर जो नए तथ्य प्रकाश में आए, उनसे पुरानी मान्यताओं की पुष्टि नहीं होती है। जिस आधार पर आक्रमण के सिद्धान्त को लागू किया गया था, उसकी पुष्टि का कोई आधार नहीं मिला।

इन तथ्यों से भारतीय विद्वान, लेखक, पुरातत्वविद, विज्ञानी और आध्यात्मिक नेता प्रभावित हुए हैं, लेकिन अभी तक इन तथ्यों ने पाठ्य-पुस्तकों में स्थान नहीं प्राप्त किया। प्रश्न है कि नए तथ्यों के प्रकाश में पाश्चात्य देशों की पाठ्य-पुस्तकों में परिवर्तन हो सकता है तो भारत मं क्यों नहीं?

उग्र की नारी चेतना

—रामचन्द्र तिवारी

'औरत होने की सजा' के लेखक श्री अरविन्द जैन ने शापेनहॉवर के 'एसे ऑन वूमेन' का जो अनुवाद प्रस्तुत किया है उसकी आरम्भिक पंक्तियाँ हैं—

''सच तो यह है कि हमारे सारे परम्परागत सोच में नारी को दो हिस्सों में बाँट दिया गया है। कमर से ऊपर की नारी और कमर से नीचे की औरत। हम पुरुष को उसकी सम्पूर्णता में देखते हैं, उसकी कमियों और कमजोरियों के साथ उसका मूल्याङ्कन करते हैं। नारी को हम सम्पूर्णता में नहीं देख पाते। कमर से ऊपर की नारी महिमामयी है, करुणाभरी है, सुन्दरता और शील की देवी है। वह कविता है, संगीत है, अध्यात्म और अमूर्त है। कमर के नीचे वह काम कंदरा है, कुत्सित और अश्लील है, ध्वंसकारिणी है, राक्षसी है, और सब मिलाकर नरक है।'' श्री जैन ने औरत की वर्तमान सामाजिक जीवन-स्थितियों का गम्भीर विश्लेषण करते हुए उसकी पीड़ा का साक्षात्कार कराने का पूरा प्रयत्न किया है, इसमें सन्देह नहीं। शापेन हॉवर का निबन्ध भी उन्होंने इसी क्रम में प्रस्तुत किया है। किन्तु यह सब उन्होंने सन् 1995 में किया है। किन्तु श्री बेचन शर्मा 'उग्र' ने नारी की पीड़ा का इजहार करते हुए बहुत पहले लिखा था—

''ब्याह के बाद अपने घर में आई हुई पराई लड़की जाल में फँसा हुआ शिकार है, मुट्ठी में आया हुआ दुश्मन है। अपनी शर्तों पर उसको अपनाओ, अपनी झकों पर उसे नचाओ''। इसके बाद धीरे-धीरे कोठरी के बाहर निकलने की आज्ञा मिलती है, वह भी उनके सुख के लिए नहीं बल्कि 'काम सीखने के लिए' क्योंकि मध्य श्रेणी की गृहस्थ ललनाओं को महीने भर से अधिक ट्रायल नहीं दिया जा सकता। चार-छः महीने बीतते उन्हें हार्ड लेवर मिलने लगता है। उस लेबर को नैनी जेल का हार्ड लेबर देख ले, दंग रह जाय। अरे नैनी जेल और उसका स्टाफ ही ससुराल जेल ऐण्ड स्टाफ के सम्मुख तुच्छ है। (उग्र और उनका साहित्य, पृ० 34) 'उग्र' जी ने अन्य अनेक सन्दर्भों में अनेक रूपों में पीड़ित होने वाली मध्यवर्गीय नारी के दर्द को वाणी दी है। आज तो अनेक महिला लेखिकायें स्वयं विद्रोही तेवर में अपनी पीड़ा का इजहार कर रही हैं। अपने साथ हजारों वर्षों से होते चले आ रहे अन्याय और उत्पीड़न का हिसाब माँग रही हैं। उनके साथ अनेक पुरुष लेखक भी पारम्परिक अन्याय और शोषण की पर्तों को एक-एक कर उधेड़ रहे हैं। स्त्रियों को लेकर समय-समय पर जो कानून बनाये गये हैं उनके अन्तर्विरोधों की गहरी पड़ताल की जा रही है और सब मिलाकर 'नारी' को पूर्णतः मुक्त करने का आन्दोलन चल पड़ा है। इस 'मुक्ति' का रूप क्या होगा? भविष्य में पुरुष-स्त्री सम्बन्ध का स्वरूप क्या होगा? सामाजिक सम्बन्धों को किस प्रकार परिभाषित किया जायगा। अभी तक तो शास्त्रों के सारे बन्धन 'नारी' के लिए ही बनाए गए प्रतीत होते हैं। अब जो नये शास्त्र रचे जायँगे उनमें पुरुषों की स्वच्छन्दता को किस प्रकार नियंत्रित किया जायगा? यह सब स्पष्ट नहीं है। लेकिन इतना स्पष्ट है कि 'परिवर्तन' की अबाध गति सारी व्यवस्था को उलट देगी और पुरुष-प्रधान समाज का ढाँचा टूट कर रहेगा।

कहना न होगा 'उग्र' जी ने आज से बहुत पहले अपनी रचनाओं के माध्यम से इस ढाँचे पर गहरी चोट की थी। 'ससुराल' को नैनी जेल से उपमित करने और ससुराल वालों की तुलना नैनी जेल के स्टाफ से करने का साहस 'उग्र' जी ही दिखा सकते थे। उनकी प्रसिद्ध रचना 'मनुष्यानंद' की एक 'नारी' कहती है—

''सभी स्त्रियों को चाहिए कि पुरुषों का हृदय अपने पैरों तले दबाकर कुचल दिया करें, जैसे उन्मत्त हथिनी अपने प्रचण्ड पैरों के नीचे बताशे को कुचले। यह पुरुष जाति धोखेबाजों, अत्याचारियों और कायरों की जाति है—जो सदा हम स्त्रियों को फुसला-फुसला कर नष्ट करती और हमारे प्राणों को घास-भूसे की तरह पशुता से कुचलती आ रही है।'' कहना न होगा कि आज भी कोई पुरुष लेखक तो क्या महिला लेखक भी घोर प्रतिक्रिया के क्षणों में भी पुरुषों के लिए एक साथ 'धोखेबाज', 'अत्याचारी' और 'कायर' विशेषणों का प्रयोग करने में हिचकेगी। 'आज' नारी-मुक्ति आन्दोलन से जुड़े सभी रचनाकारों को 'उग्र' जी की इस 'उग्रता' का स्वागत करना चाहिए और मुक्त मन से स्वीकार करना चाहिए कि 'उग्र' जी नारी-चेतना अपने समय की सीमाओं का अतिक्रमण करने वाली है।

'उग्र' उग्र होते हुए अपने पत्रों के माध्यम से हास्य विनोद बिखेरते रहते थे। उनके हास्य विनोद और पत्रकारिता का तेवर पढ़िये! पढ़िये!!

उग्र की पत्रकारिता

—धीरेन्द्रनाथ सिंह

हिन्दुस्तान टाइम्स का इतिहास

दिल्ली के अंग्रेजी दैनिक समाचारपत्र 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ने (1924-2001) अपनी कौस्तुभ जयन्ती (75वें वर्ष) के सुअवसर पर अपनी जीवन-यात्रा पर 197 पृष्ठों का सुपाठ्य सामग्री से सुसज्जित ग्रन्थ प्रकाशित किया है। इसके पाँच लेखों में स्वतंत्रता-संग्राम, पत्रकारिता के विकासक्रम, राष्ट्रवाद की जड़ों को मजबूत करने की उत्तरोत्तर पनपती चेतना और यशोधन पत्रकारों की सूझबूझ के प्रसंग के प्रशंसनीय विवरण हैं। पत्रकारवरेण्य सर्वश्री प्रेमशंकर झा, श्यामलाल और इन्द्रजीत ने पत्रकारिता एवं प्रकाशनसम्बन्धी आरम्भिक परेशानियों पर भरपूर प्रकाश डाला है।

इस पत्र की जन्म-कहानी उतार-चढ़ाव का दस्तावेज है। गुरुकी बाग की रक्तरंजित घटना और जलियाँवाला के क्रूरतापूर्ण अंग्रेजी शासन के कुकृत्य से उत्तेजित मानसिकता की पृष्ठभूमि है। प्रारम्भ में अकालियों ने इसका प्रकाशन शुरू किया, किन्तु वे आर्थिक कारणों से इसे सम्भाल न सके। तब महामना मालवीयजी ने इसे खरीदा और संचालन का भार उन्हीं को सौंपा। मालवीयजी को इतनी फुर्सत कहाँ थी कि वे वहाँ बैठ कर देखरेख कर सकें। अन्ततः उन्होंने इसे बिरला-परिवार (सेठप्रवर घनश्यामदास बिरला) को सौंपा। मालवीयजी इसके निदेशक-मण्डल के आजीवन अध्यक्ष बने रहे। बिरलाजी ने इसके सुसंचालन के लिए अपने विश्वासपात्र श्री पारसनाथ सिंह को और बाद में महात्मा गाँधी के सुपुत्र श्री देवदास गाँधी के हाथ में इसकी बागडोर रखी। श्री देवदास मृत्युपर्यन्त (1957) इसके प्रबन्ध-सम्पादक बने रहे। 1957 में श्री कृष्णकुमार बिरला की देखरेख में इसका उत्तरदायित्व आया। इन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में इसे शिखर पर पहुँचाया। अब इसकी देखरेख श्री कृष्णकुमार बिरला की सुपुत्री श्रीमती शोभना भरतिया के सुदृढ़ हाथों में है, जो बिरला परिवार के पदचिह्नों पर इसका संचालन कर रही हैं।

इसके सम्पादकों में जे०एन० साहनी, पोथेन जोसेफ (जिनका 'ओवर ए कप आफ टी' स्तम्भ अत्यधिक चर्चित था), दुर्गादास और मूलगाँवकर की लेखनी-प्रसूत सर्जनात्मक सामग्री आज भी पत्रकारों के लिए मार्गदर्शक है।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' की लम्बी यात्रा की पार्श्वभूमि में घनश्यामदास बिरला रहे हैं जिनके जीवन में राष्ट्रवाद का चिन्तन कभी सुप्त नहीं हुआ। उन्होंने कभी प्रत्यक्ष रूप से इसके संचालन में हस्तक्षेप नहीं किया किन्तु इसे सुपथ से विचलित भी नहीं होने दिया। अपने पुण्यश्लोक पिता के दायित्व का विवेकसम्मत निर्वहन श्री कृष्णकुमार बिरला ने किया और उनकी सुपुत्री श्रीमती शोभनाजी कर रही हैं।

20×30 चौपेजी आकार में यह महाग्रन्थ न केवल पठनीय और संग्रहणीय ही नहीं, अनुपम और अनुकरणीय है। आर्ट पेपर पर छपे इस ग्रन्थ की स्वच्छता अत्यधिक मनोरम है। **—पारसनाथ सिंह**

पूर्व सम्पादक 'आज' तथा
प्रधान सम्पादक 'प्रदीप'

भाषा, साहित्य, संवाद, समाचार

मनुष्य में जब तक सौन्दर्यानुभूति और उदात्त के प्रति आग्रह है तब तक साहित्य की जरूरत महसूस होती रहेगी।

अब भी करोड़ों भारतीयों को वर्षों तक निरक्षरता और अशिक्षा से लड़ने के लिए साहित्य पर ही निर्भर रहना होगा, चाहे वह सूचनात्मक साहित्य हो या सृजनात्मक और जिस भविष्य की मैं कल्पना कर रहा हूँ उसमें भारत की साक्षरता शिक्षा की ओर बढ़ेगी तथा शिक्षा काफी हद तक साहित्य की ओर।

साहित्य चूँकि शब्द और अर्थ की सम्पृक्ति यानी भाषा की देन है और भाषा चूँकि समाज की देन है इसलिए साहित्य वस्तुत: समाजधर्मी होता है और समाज विशेष या सामाजिकता विरहित साहित्य की कल्पना नहीं हो सकती।

शब्द में अन्तर्विहीत अर्थ और उसकी विभिन्न ध्वनियाँ केवल शब्दशास्त्र का विषय नहीं है। उसके पीछे मानव सभ्यता, उसके संस्कार और संस्कृति की संस्कृतियाँ भी हैं। **—श्रीलाल शुक्ल**

❑ ❑ ❑

हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माण में सभी जातियों और धर्मों के लेखकों ने अपनी भूमिका निभायी। इसलिए हिन्दी को केवल हिन्दुओं और हिन्दी प्रदेशों की भाषा कहना गलत है, आज कुछ राष्ट्रवादी ताकतें हिन्दी को 'हिन्दूवादी' भाषा पेश करने में लगी है। गत वर्ष लंदन में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन इसका एक उदाहरण था।

हिन्दी में कबीर, रहीम, रसखान, गुरुनानक, रैदास, नामदेव जैसे अनेक लोग पैदा हुए जो न तो हिन्दू थे और न ही केवल हिन्दी के प्रदेश के थे। आजादी के दौरान और आजादी के बाद भी विभिन्न भाषा, धर्म और जातियों के लोगों ने हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। महात्मा गाँधी गुजराती होते हुए हिन्दी के समर्थक थे।

आज राष्ट्र की नयी परिभाषा बन रही है। भारतीय राष्ट्र बहुलवादी है क्योंकि यहाँ सांस्कृतिक एवं भाषायी विविधताएँ हैं। अगर हिन्दी को आगे बढ़ाना है तो उसे सभी भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर ही काम करना होगा। यह सही है कि हिन्दी एक ऐसे धागे के समान है जो सारी भाषाओं के फूलों की माला गूँथने का काम कर सकती है और इस तरह राष्ट्रीय एकता को मजबूत बना सकती है। आजादी की लड़ाई के दौरान हिन्दी उपनिवेशवाद से मुक्ति की भाषा रही। आज उसे सभी भारतीय भाषाओं की मुक्ति के लिये नेतृत्व करना है। **—नामवर सिंह**

❑ ❑ ❑

यदि किसी साहित्यकार की रचना से उकता जाता हूँ तो इसमें मेरी बुद्धि का दोष नहीं है, दोष उसकी कला का है। शक्तिमान साहित्यकार को अपनी कला को कम से कम इतना विकसित तो करना ही चाहिए कि पाठक उसे पढ़ने में लीन हो जाए। मुझे खेद होता है कि हमारे साहित्य में यह बात बहुत कम दिखायी देती है। हमारा साहित्य इस समय ऐसा है कि उसमें से जनता एकाध वस्तु भी ग्रहण नहीं कर सकती। उसमें से एक भी वस्तु ऐसी नहीं है जिससे वह एक युग, एक वर्ष, अथवा एक सप्ताह तक भी टिक सके।

अब हम यह देखें कि अनादिकाल से हमारे पास जो ग्रन्थ चले आ रहे हैं उनमे ंकितना साहित्य? हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों से हमें जितना संतोष मिलता है आधुनिक साहित्य से उतना नहीं मिलता। इस साहित्य के मामूली अनुवाद में भी जो रस आ सकता है वह आज के साहित्य में नहीं आ आ पाता। **—महात्मा गाँधी**

❑ ❑ ❑

कल का आदमी सभ्यता में विकसित नहीं था, किन्तु संस्कृति में श्रेष्ठ था। वह प्रकृति से प्रेम और ईश्वर से भक्ति करता था। आज का आदमी वैज्ञानिक आविष्कारों एवं सभ्यता के दृष्टिकोण से अति विकसित माना जाता है, किन्तु वह संस्कृति के दृष्टिकोण से बहुत पीछे रह गया। उसने प्रकृति को उदासीन कर दिया। वह ईश्वर को भूल गया। यही स्थिति यदि आगे भी जारी रही तो प्रलयकाल भी निकट आ जाएगा। हम इसका बदनाम न बनें। इससे बचने के लिए हम पहले प्रकृति से प्रेम करना सीखें और ईश्वर से भक्ति।

—चेन्नै से प्रकाशित हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका 'आदान-प्रदान' में सम्पादक **डॉ० एम० गोविन्दराजन** का अभिमत

❑ ❑ ❑

आज लेखन-कर्म और प्रकाशन व्यवसाय चारों ओर से बड़ी मार खा रहा है। हिन्दी की अनेक अच्छी अभिरुचि वाली और लोकप्रिय पत्रिकायें बन्द हो गयी हैं। कल्पना हो या अवन्तिका, नया साहित्य हो या ज्ञानोदय, धर्मयुग हो या साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कहानी हो या नई कहानी, दिनमान हो या सारिका— ये सभी और इन जैसी अन्य अनेक पत्रिकायें तीन-चार दशक पहले लेखन क्षेत्र में ऐसा सजग और चिंतनशील वातावरण बनाए हुए थीं कि इनमें छपी कोई भी रचना पाठकों में चर्चा का विषय बन जाती थी। आज यह भूले-बिसरे युग की बात बन गई है।

अच्छी पुस्तकों के पाठक पहले भी अधिक नहीं थे, अब और भी कम हो गए हैं। आज यदि पुस्तकों की सरकारी संस्थानों द्वारा खरीद न हो और पुस्तकालयों में इनकी कुछ खपत न हो तो प्रकाशकों का दिवाला निकल जाए।

पुस्तकों के वितरण का एकमात्र प्रभावी माध्यम डाक व्यवस्था है। दूर-दूर तक पुस्तकें, बुक पोस्ट, वी०पी०पी० द्वारा भेजी जाती है, किन्तु पुस्तकों के पहुँचने की पूरी सम्भावना नहीं होती। इसलिए उन्हें रजिस्टर्ड डाक से भेजा जाता है। रजिस्ट्री कराने का मूल्य पहले ही बहुत ज्यादा था—चौदह रुपये। अब इसे बढ़ाकर सत्रह रुपये कर दिया गया। वी०पी० तो रजिस्टर्ड डाक से जाती है।

पुस्तक के भार का मूल्य भी बहुत बढ़ा दिया गया है। पहले 100 ग्राम तक 50 पैसे लगते थे, अब 2 रुपये लगेंगे। अब 60 रुपये की पुस्तक पर 25 रुपये डाक व्यय लगेगा।

सरकार डाक की उन बढ़ी हुई दरों को वापस ले ले जिनसे पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ प्रभावित होती हों। इस सरकार को यह कलंक अपने माथे पर नहीं लेना चाहिए कि उसने साहित्य और संस्कृति के विकास के लिए ठोस कदम तो उठा या नहीं, बल्कि उनकी प्रगति में बहुत-सी बाधाएँ खड़ी कर दीं।

—महीप सिंह

❑ ❑ ❑

भाषाओं की अनेकता और विविधता भारतीय संस्कृति और परम्परा की उत्कृष्ट विशिष्टताओं में एक है। मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को सीखना सदा ही एक मोहक प्रयास होता है। बच्चों में अनेक भाषाओं को शीघ्र सीखने की असीम क्षमता होती है। भारतीय समाज में विशाल साहित्यिक निधि से परिपूर्ण विभिन्न भारतीय भाषाएँ एक दूसरे के व्यवहारों तथा परम्पराओं को भाषाओं के ज्ञान और परिचय के द्वारा समझने का विशेष अवसर प्रदान करती हैं। अपनी सभी विविधताओं और बहुलताओं के वैभव से युक्त राष्ट्रीय एकता से समृद्ध भारतीय समाज को सुनिश्चित करने के लिए सभी बच्चों में राष्ट्र की सभी भाषाओं के प्रति संवेदनशीलता के साथ सम्मान उत्पन्न करने का उत्तरदायित्व शिक्षा व्यवस्था पर आता है। **—जगमोहन सिंह राजपूत**

❑ ❑ ❑

अगर मुझसे पूछा जाए कि भारत की सबसे बड़ी निधि क्या है और उसकी सबसे सुन्दर धरोहर क्या है, तो मैं बिना हिचक के उत्तर दूँगा कि वह संस्कृत भाषा और साहित्य है और वह सब जो उसमें है। यह एक भव्य विरासत है और जब तक यह सहन हो और हमारे लोगों के जीवन को प्रभावित करे, तब तक भारत की मूल प्रतिभा जारी रहेगी।

—जवाहरलाल नेहरू

❑ ❑ ❑

संस्कृत भाषा में भारत का प्राचीन दर्शन और साहित्य है। अत: यह आवश्यक है कि इस भाषा के अध्यापन के विशेष प्रबन्ध किए जाएँ।

—मौलाना अबुल कलाम आजाद

❑ ❑ ❑

विश्व समुदाय भारत का उसकी प्राचीन संस्कृति तथा मानव मूल्यों के लिए आदर करता है। संस्कृत संस्कृति की भाषा है, केवल भारत की नहीं बल्कि मानव मात्र की। **—सी० सुब्रमण्यम**

अगर हिन्दी को राजभाषा न बनाया गया होता तो हिन्दी का बहुत बड़ा उपकार होता। उसे राजभाषा बनाकर एक व्यर्थ के चोंचले में फँसा दिया गया। मैंने इस विषय को लेकर सरकार के सम्मुख एक प्रस्ताव भी रखा है कि सभी भारतीय भाषाओं में क्या हो रहा है इसे एक समग्र रूप में देखा जाए और फिर राजकाज में ही नहीं बल्कि व्यापार, ज्ञान, कानून, मीडिया आदि क्षेत्रों के मद्देनजर एक राष्ट्रीय भाषा आयोग बनाया जाना चाहिए जो प्रत्येक वर्ष एक रिपोर्ट तैयार करे। जिसमें हमारी विभिन्न भाषाओं में क्या प्रगति हो रही है इसका उल्लेख हो। सरकार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है।

समाज के केन्द्र में कला और साहित्य शायद ही कही रहे हों। हाशिए पर रहना कला और साहित्य की सदा ही नियति रहा है। हम ऐसी परम्परा के लोग हैं जो अपने आप में बहुकेन्द्रित रही है। यहाँ छः तरह के दर्शन हैं, चार तरह के वेद हैं। बहुलता तो हमारी परम्परा की घुट्टियों में मिली हुई है। लेकिन समाज को कला और साहित्य की बहुत आवश्यकता है। इस ओर ध्यान देना निहायत जरूरी है।

—अशोक वाजपेयी

मनोज दास सम्मानित

उड़िया के साहित्यकार **मनोज दास** को उनके उपन्यास 'अमृत फल' के लिए इस वर्ष का सरस्वती सम्मान प्रदान किया जायेगा। यह उपन्यास आज के आदमी और उसके पूर्वजों के बीच की विभिन्नता को दर्शाता है। यह पुरस्कार के०के० बिड़ला फाउण्डेशन की ओर से दिया गया। इसके अन्तर्गत विजेता को पाँच लाख रुपये नकद, प्रशस्ति पत्र और शाल प्रदान किया गया है।

पद्मश्री सम्मान लेने से पहले शायर का निधन

उर्दू और फारसी भाषा के विद्वान् और शायर **कालीदास गुप्ता 'रिजा'** का पद्मश्री सम्मान लेने से केवल तीन घण्टे पहले दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वह 76 वर्ष के थे।

अक्षर भारती

लेखक : **डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव**
प्रकाशक : **लता प्रकाशन,** पाटलिपुत्र (पटना)
मूल्य : **26 रुपये**

'अक्षर भारती' संस्कृत भाषा में लिखा गया 43 निबन्धों का सुन्दर संकलन है। ग्रन्थ की भाषा सरल और मनोरम है। इसमें साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, जीवनवृत्तान्त, समसामयिक विषयों के अतिरिक्त लेखक की संस्कृत-कविताओं का भी संकलन है। साहित्य और संस्कृति विषयक निबन्धों में अथर्ववेद का पृथिवीसूक्त, नाटकों की उपादेयता, संस्कृत-महिमा, संस्कृत में जैन साहित्य, संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीयता, योगदर्शन का परिचय, कालिदास का दाम्पत्य चित्रण, कबीर का सन्देश, महाकवि माघ का शास्त्रीय पांडित्य, बिहार में संस्कृत की पत्र-पत्रिकाएँ, महात्मा गाँधी के ईश्वर-विषयक विचार आदि निबन्ध हैं। समसामयिक निबन्धों में वेदोत्तर काल में पंचायत का स्वरूप, विकलांग वर्ष, बीस सूत्री कार्यक्रम और भारत का अन्तरिक्ष अनुसंधान आदि का संकलन है। जीवन-वृत्तान्तों में श्री जयप्रकाश नारायण, श्री नेहरू, श्री लालबहादुर शास्त्री और श्री रामावतार शर्मा से संबद्ध निबन्ध हैं। अन्य गद्यात्मक निबन्धों में पाटलिपुत्र, चम्पू साहित्य, संस्कृत के गीतिकाव्य और मारुति-चरितामृत मुख्य हैं। पद्य भाग में वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, विजया, सरदार पटेल, पं० दीनदयालु उपाध्याय, विश्वमैत्री, भारत-वन्दना आदि से संबद्ध लेखक की पद्यात्मक रचनाएँ हैं। संस्कृतप्रेमी व्यक्तियों के लिए सुन्दर और उपादेय ग्रन्थ है।

—डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

सम्मान-पुरस्कार

के०के० बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त

प्रो० रामानुजताताचार्य को वाचस्पति पुरस्कार

सरस्वती सम्मान के एक लाख रुपये का वर्ष 2000 का वाचस्पति पुरस्कार **प्रो० एन०एस० रामानुजताताचार्य** को उनके आलोचनात्मक ग्रन्थ 'प्रत्यक्षतत्व चिन्तामणि विमर्श' के लिए दिया गया है।

पुरस्कृत ग्रन्थ में तत्वचिन्तामणि के प्रत्यक्ष खण्ड में गंगेशोपाध्याय के द्वारा पाद रूप में विवेचित प्रायः 15 विषयों का तुलनात्मक विवेचन किया गया है।

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी को शंकर पुरस्कार

के०के० बिड़ला फाउण्डेशन ने भारतीय दर्शन, संस्कृति और कला की उत्कृष्ट कृतियों को सम्मानित करने के लिए आदि शंकराचार्य के नाम पर स्थापित वर्ष 2000 का शंकर पुरस्कार **डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी** द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र विश्वकोश' को दिया जा रहा है। 1949 में जन्मे डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में संस्कृत विभाग के आचार्य तथा अध्यक्ष हैं।

पुरस्कृत ग्रन्थ में नाट्यशास्त्र की भारतीय तथा पाश्चात्य परम्पराओं का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया गया है। शेष तीन भागों में अकारादि क्रम से नाट्यशास्त्रीय पारिभाषिक शब्दों या अवधारणाओं का सर्वांगीण विवेचन है, जिसमें वेद, उपनिषद्, इतिहास-ग्रन्थों, पुराणों आदि से प्रामाणिक उद्धरण या संदर्भ दिए गए हैं।

श्री बशीर अहमद मयूख को बिहारी पुरस्कार

दस वर्षों में प्रकाशित राजस्थान के किसी लेखक की उत्कृष्ट कृति को प्रतिवर्ष दिया जाने वाला पुरस्कार महाकवि बिहारी के नाम पर वर्ष 2000 का बिहारी पुरस्कार **श्री बशीर अहमद मयूख** को उनकी काव्य कृति 'अवधू अनहद नाद सुने' के लिए दिया जायेगा। इसकी पुरस्कार राशि 1,00,000 रुपये है।

'अवधू अनहद नाद सुने' उनकी नवीनतम काव्य रचना है जो भारतीय आध्यात्मिक मनोभूमि की बुनियाद को रेखांकित करती है और जिसमें 'शब्द' ब्रह्म चेतना का दर्शन कराता है। इनकी कविता में संगीत है, संवेदन है, अध्यात्म का दर्शन है और सुकोमल अनुभूति है।

राजी सेठ को वाग्मणि सम्मान

राजस्थान लेखिक साहित्य संस्थान की ओर से देश की प्रख्यात कहानी और उपन्यास लेखिका **श्रीमती राजी सेठ** को वाग्मणि सम्मान से सम्मानित किया गया जबकि संस्थान कर्मश्री सम्मान प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय की पूर्व निदेशक **श्रीमती आशा दीक्षित** को दिया गया।

श्रीमती राजी सेठ को वाग्मणि सम्मान के रूप में वाग्देवी की प्रतिमा, शाल, श्रीफल और सम्मान पत्र तथा श्रीमती आशा दीक्षित को स्मृति चिह्न, शाल, श्रीफल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

शम्भूनाथ को अकादमी का अवस्थी सम्मान

हिन्दी आलोचना के लिए वर्ष 2000 का देवीशंकर अवस्थी सम्मान आलोचक **डॉ० शम्भूनाथ** को उनकी पुस्तक 'संस्कृति की उत्तरकथा' पर आलोचना में उत्कृष्टता, प्रासंगिकता एवं विश्लेषण की सामर्थ्य के लिए साहित्य अकादमी में आयोजित समारोह में, श्री पी०सी० जोशी की अध्यक्षता में दिया गया।

मालती शर्मा को महादेवी वर्मा सम्मान

अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा द्वारा पुणे की **श्रीमती मालती शर्मा** को उनकी विशिष्ट कविता पुस्तकों और काव्यविधा में योगदान के लिए 'कवयित्री महादेवी वर्मा सम्मान' से सम्मानित किया गया। श्रीमती शर्मा लोकवार्ताविद और बाल साहित्यकार हैं। मूलतः वे उत्तर भारत की हैं।

विक्रम सेठ सम्मानित

भारतीय लेखक **विक्रम सेठ** को ब्रिटेन ने उनकी साहित्य सेवा के लिए सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया। उपन्यास 'सूटेबल ब्वाय' के लिए चर्चित सेठ को ब्रिटेन के सांस्कृतिक सचिव ने 'कमाण्डर ऑफ द आर्डर ऑफ द ब्रिटिश इम्पायर' (सी०बी०ई०) पुरस्कार से सम्मानित किया।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

डॉ० डेविड फ्रॉली
(वामदेव शास्त्री)

अनुवाद
केशवप्रसाद कायाँ

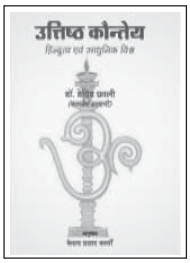

सजिल्द : 250.00
अजिल्द : 150.00

आज भारत अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। जनसंख्या की विशालता, कमरतोड़ मँहगाई, जातीयता, क्षेत्रीयता, अलगाववाद, आतंकवाद, प्रच्छन्न आक्रमण, राजनीतिक अड़ंगेबाजी, दलीय स्वार्थ, नेताओं का असमंजस आदि समस्याएँ हमारे देश को सिर उठाने नहीं दे रही हैं। फलत: हर भारतीय की सोच कुंठित हो गई है। वह अपने को किंकर्त्तव्यविमूढ़ तथा दिशाहीन अनुभूत कर रहा है।

भारत विद्या के पाश्चात्य विद्वान डॉ० डेविड फ्रॉली कुछ और प्रच्छन्न भयावह समस्याओं की ओर संकेत करते हैं। वे कहते हैं—

(1) पूर्व के दो महान धर्म—हिन्दू और बौद्ध पश्चिम के धर्मों के प्रहार से अपने अस्तित्व की रक्षा में व्यस्त हैं। पश्चिम के धर्म उन्हें समाप्तप्राय करने की पूरी कोशिश में लगे हैं। इनके धर्मावलम्बियों के पास काफी बड़ी मात्रा में आर्थिक साधन हैं जिनके बल पर वे धर्मांतरण करने में सफल हो रहे हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य देश को खण्ड-खण्ड करना है। आज तक भारत इनके प्रभाव को रोकने के बजाय तुष्टीकरण के रास्ते पर चलता रहा है।

(2) इन विदेशियों ने आयातित धर्म निरपेक्षवाद के चंगुल में भारत को फँसा दिया है। कुछ लोगों ने धारणा बना रखी है कि आयातित धर्म-निरपेक्षवाद तथा पाश्चात्य संस्कृति से ही देश की आर्थिक उन्नति होगी तथा इसी के फलस्वरूप देश आधुनिक प्रगतिशील तथा मानवतावादी समझा जाएगा। इस धारणा ने हिन्दू की बुद्धि को इतना कुंठित कर दिया है कि वह इस्लाम तथा इसाई धर्म की अनुचित आलोचना का प्रतिरोध करने की क्षमता खो चुका है। हिन्दू लोग इतने भीरु और कायर हैं कि आप उनसे कुछ कहिए वे पलट कर जवाब नहीं देते। पहले उन्होंने मुसलमानों से पराजय पाई, बाद में अंग्रेजों से और अब भी वे इतने दिशाहीन हैं कि वे खुद भी नहीं जानते कि उन्हें क्या करना है ? इतने वर्षों की गुलामी ने उनकी मानसिकता बदल दी है और आज भी गुलामी की मानसिकता में जी रहे हैं।

डॉ० डेविड फ्रॉली ने यह भी स्पष्ट किया कि पुरातन भारत में हिन्दुओं ने कभी संघर्ष से मुँह नहीं मोड़ा। मुसलमान आक्रामकों को हिन्दू शासकों के काफी कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। बार-बार पराजित होकर वे लौटते थे, फिर आक्रमण करते थे, इस प्रकार काफी कड़े संघर्ष के बाद ही वे सफल हुए। भारतवासी अपना सब कुछ यहाँ तक कि अपने प्राण देकर अपने देश और अध्यात्म की रक्षा करते रहे। आज उसके पुरावर्तन की आवश्यकता है।

डॉ० फ्रॉली ने एक बहुत बड़े सत्य की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। वह यह कि चुनौतियों का सामना न करने की इच्छा या उनसे न लड़ने के उत्साह का कारण कायरता नहीं बल्कि संघष के प्रति उदासीनता है।

कृष्ण के स्वर में स्वर मिलाकर आज के हर अर्जुन (हिन्दू) को डेविड फ्रॉली दो टूक शब्दों में कहते हैं—अर्जुन उठो, क्लीक्ता छोड़ो ! यह संघर्ष किसी एक काल का नहीं, सदा चलता रहने वाला संघर्ष है। असत्य से सत्य का समझौता न हुआ है न होगा। सत्य की प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष जारी रखना होगा।

लगता है अन्धकार बस छँटने को ही है और फ्रॉली के शब्दों में हर हिन्दू उठ खड़ा होगा और दृढ़ प्रतिज्ञ होकर कहेगा।

मैं सत्य और धर्म की रक्षा के लिए हर तरह के त्याग के लिए प्रस्तुत हूँ। असम्मानपूर्वक जीने की अपेक्षा युद्ध करते हुए सम्मानपूर्वक मरण वरेण्य है। अधर्म से किसी भी हालत में समझौता सम्भव नहीं।

हम डॉ० फ्रॉली के विश्वास की रक्षा हर भारतीय का कर्तव्य होता है।

विद्वान लेखक ने सभी पक्षों और चुनौतियों पर विचार किया है और अन्त में निष्कर्ष के रूप में लिखा है कि विश्व का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करने में मात्र भारत सक्षम है। लेकिन यदि भारत के चिंतक, विचारक तथा नेता भ्रष्टाचार में लिप्त रहें तो नैतिक दायित्व उठाने में भारत अक्षम रहेगा। असत्य से समझौता करना न हिंसा है और न सहनशीलता, अपितु आत्महत्या है आवश्यकता है भारत के बुद्धिजीवी, आध्यात्मिक गुरू तथा नेतागण अपनी तंद्रा त्यागकर उठें और मानवता की रक्षा के लिए तथा विश्व शान्ति के लिए कटिबद्ध हों।

हम भारतीयों में जागर्ति लाने का स्तुत्य प्रयास 'उत्तिष्ठ कौन्तेय' करेगी। पुस्तक के मूल लेखक डेविड फ्रॉली, अनुवादक केशवप्रसाद कायाँ और प्रकाशक अनुराग मोदी तीनों ही धन्यवाद के पात्र हैं।

—डॉ० युगेश्वर

हिन्दी-पत्रिकाएँ

निजी स्तर पर नित नई पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ लुप्त हो रही हैं, अत: क्षेत्रीय स्तर पर पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी हैं। दक्षिण भारत से छोटे-छोटे नगरों से एक नहीं कई पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, कहीं काल के प्रवाह में लुप्त न हो जायें अत: उनका लेखांकन रखने की अपेक्षा है।

आदान-प्रदान (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० एम० गोविन्दराजन
सम्पर्क, भाषा संगम, तमिल हिनदु तुलनात्मक अध्ययन केन्द्र, त्यागराय नगर
चेन्नै-600017

सूर सौरभ (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० एन० सुन्दरम्
सम्पर्क, प्लाट नं० 10 बालजी नगर, चेन्नै-600092

अर्थात् (त्रैमासिक)
सम्पादक : मनोजकांत
आस्था कुटी, 42 नियावाँ रोड, फैजाबाद-224001
(वार्षिक 400.00)

जयन्तिका (त्रैमासिक)
सम्पादक : सरजू तिवारी
सत्यवादी सदन, विवेकानन्द कालोनी
गाजीपुर-230001 (वार्षिक 100.00)

वीणा (मासिक)
1927 ई० से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ० श्यामसुन्दर व्यास
11 रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग, इन्दौर-452001
(वार्षिक 50.00)

मड़ई
सम्पादक : डॉ० कालीचरण यादव
बनियापारा, जूना विलासपुर, छत्तीसगढ़ (नि:शुल्क)

युद्धरत आम आदमी (त्रैमासिक)
सम्पादक : रमणिकलाल गुप्ता
सी०5, लाजपत नगर-1, नई दिल्ली-24
(वार्षिक 80.00)

दायित्व बोध (त्रैमासिक)
सम्पादक : विश्वनाथ मिश्र
81 समाचार अपार्टमेंट, मयूर विहार फेज-1
दिल्ली-91 (वार्षिक 64.00)

समकालीन सेतु (द्वैमासिक)
सम्पादक : मनोजकांत
आस्था कुटी, 42 नियावाँ रोड,
फैजाबाद-224001 (वार्षिक 400.00)

परम्परा का आइना (त्रैमासिक)
सम्पादक : तुफैल चतुर्वेदी
आर० 64, सेक्टर 12, प्रताप विहार, गाजियाबाद

कान्तिमन्यु (मासिक)
सम्पादक : डॉ० ताराचन्द पाल 'बेकल'
शान्ति निकेतन, एच-218, शास्त्रीनगर, मेरठ
(वार्षिक 100.00)

अभिप्राय
सम्पादक : राजेन्द्रकुमार
12 बी 11, बंद रोड, इलाहाबाद
(संयुक्तांक 40.00)

अकार
सम्पादक : गिरिराज किशोर
796 वीणा निकुंज, अवधपुरी रोड, कानपुर
(25.00)

संचारश्री
सम्पादक : डॉ० रमेशचंद्र त्रिपाठी
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
(25.00)

आकलन (मासिक)
सम्पादक : राजुरकर राज
एच० 3, 3 दिवदास मेहता परिसर, नेहरू नगर
भोपाल-462003 (वार्षिक 50.00)

प्रो. कल्याणमल लोढ़ा
की
कृतियों पर विद्वानों के विचार

वाक्सिद्धि

एक सौ साठ रुपये

'वाग्दोह' पढ़कर मुग्ध हो गया। पांडित्य, सुधी संकलन और समन्वय एवं प्रशस्त व्याख्या में 'वाग्दोह' बेजोड़ है। किन्तु 'वाग्दोह' मात्र मेधा का सूक्ष्म व्यायाम नहीं है, इसमें कवि की कल्पना, मनीषा, वाग्वैदिग्ध्य और रस-लालित्य का जो विलक्षण संपुट है, वह सरस्वती की अनुकम्पा का साक्ष्य है। आपका कृतित्व हमें गौरवान्वित करता है, आपके कृतित्व की प्रशस्ति में वागर्थ की प्रशस्ति है। **—लक्ष्मीमल सिंघवी**

❑ ❑ ❑

'वाग्दोह' बेजोड़ है, काव्यविषयक ऐसा निबन्ध पहले नहीं पढ़ा था। **—कुमार विमल,** पटना

❑ ❑ ❑

आपकी वाक् शृंखला की पुस्तकें एक-एक करके पढ़ीं। वाक्तत्त्व में मेरी गहरी रुचि है ओर आपकी संयोजन प्रतिभा अद्भुत है, कहाँ से कहाँ ले जाते हैं और देखने में असंगत बातों को बड़ी कुशलता से जोड़ते हैं। वस्तुत: वाक् की हमारी परम्परा है, इसे ही अपना स्वरूप कह सकते हैं। यह सर्जनात्मकता है, सृष्टि है और सर्जक तीनों ही।

आपने आगम निगम का आलोडन किया है, साहित्य का भी निष्पादन किया है। आपके वाग्वैदग्ध्य की यह विशेषता है कि आप इतना सब इतने कम शब्दों में समेट लेते हैं। **—डॉ० विद्यानिवास मिश्र**

❑ ❑ ❑

वाक् शृंखला में वाक्पथ, वाग्मिता, वाग्विभव, वाग्द्वार वाक्तत्त्व और वाग्दोह के उपरान्त विद्वान प्रो० कल्यामल लोढ़ा **'वाक्सिद्धि'** नामक ग्रन्थ जोड़ा है। 'वाङ्मुख' में उन्होंने स्पष्ट भी किया है कि ''मैं वाक् की साधना को सर्वोपरि साधना समझता हूँ।'' वाक् साधना के अप्रतिम साधक के रूप में उन्हें सदैव याद किया जायेगा। परन्तु मेरी दृष्टि में उनके साहित्यिक योगदान को परम्परा और आधुनिकता के विशेष भाष्यकार के रूप में देखना अधिक उपयुक्त होगा। उन्होंने अतीत और भविष्य को लेकर आस्थावादी और वैज्ञानिक आधारों पर महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष दिए हैं। वाक्सिद्धि सम्भवत: उनकी विकसित दृष्टि का ही प्रामाणिक विकास है। भारतीय नवजागरण; उन्नीसवीं शताब्दी, हिन्दी की सार्वदेशिकता : संक्षिप्त विवेचन आदि महत्त्वपूर्ण निबन्धों में प्रो० लोढ़ा ने विवेचना की अपनी इसी विकसित दृष्टि को आलोकित किया है।

—गंगाप्रसाद विमल, नई दिल्ली

वाग्द्वार

दो सौ पचास रुपये

वाग्दोह

दो सौ रुपये

'वाक्सिद्धि' पूरी पढ़ गया हूँ। वैसे तो प्रो० लोढ़ा का समस्त लेखन सुदीर्घ जीवनानुभवों और गम्भीर विचारमन्थन के नवनीत से सराबोर रहता है, तभी तो उसमें संस्कृत, अंग्रेजी, बंग्ला, हिन्दी आदि के वाङ्मय से चुने हुए प्रासंगिक और संग्रहणीय उद्धरण विपुल मात्रा में रहते हैं, 'वाग्दोह' में भी भारतीय परम्परा और आध्यात्मिक विरासत पर उत्कृष्ट सामग्री निहित है किन्तु वाक्सिद्धि में कुछ ऐसे विषयों पर विचारोत्तेजक और रोचक विवेचन है जिन्हें 'लीक से हटकर' मन को झकझोरने वाले विषय कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ कर्ण के चरित्र ने किस प्रकार भारतीय साहित्यकारों, विशेषकर हिन्दी के सर्जकों को सर्जनात्मक प्रेरणा दी इस पर अच्छी सामग्री है जो शायद ही अन्यत्र मिल सके। सुभद्राकुमारी चौहान के कृतित्व के कुछ आयामों पर जो प्रकाश डाला गया है उसके साथ उनके व्यक्तित्व के भी अनेक पहलू उजागर हुए हैं (जैसे कलकत्ते के साथ उनके सम्बन्ध) जो प्रासंगिक हैं। बालमुकुन्द गुप्त और भारतमित्र पर दुर्लभ जानकारी, विशेषकर भारतमित्र के एक सदी पुराने अंकों के उद्धरण तथा उस समय साहित्यकारों के बीच चलने वाले तुर्की बतुर्की सवाल-जवाब और कहाँ मिलेंगे?

स्पष्ट है कि इस प्रकार का अनुसंधानगर्भित लेखन प्रो० लोढ़ा जैसे बहुश्रुत और बहुपठित मनीषी ही कर सकते हैं। वाग्दोह में 'संस्कृत और संस्कृति' पर तथा प्राचीन वाङ्मय में राष्ट्रीयता की अवधारणा पर, साथ ही 'काल' तत्त्व पर उनका जो लेखन है वह हमारी सुदीर्घ विरासत के चिन्तन का संक्षिप्त अभिलेख-सा प्रस्तुत करता लगता है। ऐसी सामग्री के कारण, स्वभावत: यह पुस्तक संग्रहणीय बन पड़ी है।

'वाग्द्वार' में तो वाक् पर भूमिका में लिखे पहले चिन्तन के अतिरिक्त सारी सामग्री हिन्दी साहित्य के कालजयी कवियों पर विवेचनात्मक लेखन की है अत: हिन्दी साहित्य के अध्येताओं के लिए अपने आप में बहुमूल्य है ही, वाक् वाली भूमिका में भी कुछ मनसात्त्विक पक्षों पर हमारे प्राचीन चिन्तन का जो विवरण है वह संग्रहणीय है। कबीर, तुलसी, सूर, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, निराला और महादेवी तो ऐसे विषय हैं जो प्रो० लोढ़ाजी के 'अध्यापन क्षेत्र' में वर्षों से रहे हैं अत: पूरी तरह 'अधिकार क्षेत्र' के हो गए हैं। **—देवर्षि कलानाथ शास्त्री,** जयपुर

सुरुचिपूर्ण पठनीय तथा संग्रहणीय ग्रन्थ

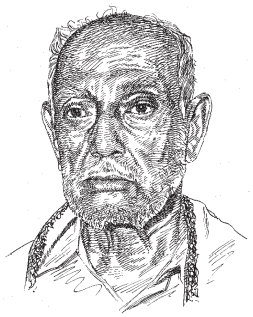

गोपीनाथ कविराज के अध्यात्मपरक ग्रन्थ

श्रीकृष्ण प्रसंग	150.00
अखण्ड महायोग	50.00
श्री साधना	50.00
दीक्षा	40.00
सनातन साधना की गुप्तधारा	80.00
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग, 1, 2, 3	160.00
ज्ञानगंज	60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ	80.00
कविराज प्रतिभा	64.00
क्रम साधना	80.00
परातंत्र साधना पथ	40.00
योगिराज विशुद्धानंद प्रसंग तथा तत्त्वकथा	130.00
भारतीय संस्कृति और साधना (प्रथम खण्ड)	200.00
(द्वितीय खण्ड)	120.00

संत चरित

सूर्यविज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज विशुद्धानंद परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	*नंदलाल गुप्त*	160
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन)	*डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह*	300
पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी	*सत्यचरण लाहिड़ी*	120
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*	150
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी	*शिवनारायण लाल*	150
योगिराज तैलंग स्वामी	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40
ब्रह्मर्षि देवराहा दर्शन	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	50
महाराष्ट्र के संत महात्मा	*ना०वि० सप्रे*	120
उत्तराखण्ड की संत परम्परा	*डॉ० गिरिराज शाह*	80
सोमबारी महाराज	*हरिश्चन्द्र मिश्र*	40
सन्त रैदास	*पद्मावती झुनझुनवाला*	150
करुणामूर्ति बुद्ध	*डॉ० गुणवंत शाह*	25
महामानव महावीर	*डॉ० गुणवंत शाह*	30
भारत के महान योगी (5 जिल्द)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	500
भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय	*डॉ० चन्द्रकला पाडिया*	150

गीता पर प्रमुख ग्रन्थ

कृष्ण और मानव सम्बन्ध	*हरीन्द्र दवे*	80
कृष्ण का जीवन संगीत	*डॉ० गुणवंत शाह*	300
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में)	*श्यामाचरण लाहिड़ी*	350
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	*ना०वि० सप्रे*	180
श्रीकृष्ण : कर्मदर्शन	*शारदाप्रसाद सिंह*	40

अध्यात्मपरक ग्रन्थ

वेद व विज्ञान	*प्रत्यगात्मानंद सरस्वती*	180
जपसूत्रम (द्वितीय खण्ड)	*प्रत्यगात्मानंद सरस्वती*	150
सोमतत्त्व	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	100
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद	*अशोककुमार चट्टोपाध्याय*	100
सब कुछ और कुछ नहीं	*मेहेर बाबा*	60

तुलसी मीमांसा

कथा राम कै गूढ़	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	125
मानस सूक्ति सूधा	*डॉ० भगवानदेव पाण्डेय*	80
मानस मीमांसा	*डॉ० युगेश्वर*	150
मानस विमर्श (दो भाग)	*भगीरथ दीक्षित*	300

कबीर मीमांसा

संत कबीर और भगताही पंथ	*डॉ० शुकदेव सिंह*	130
संतो राह दुओ हम दीठा	*डॉ० भगवानदेव पाण्डेय*	150
कबीर और भारतीय संत साहित्य	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	100
कबीर : रमैनी	*डॉ० जयदेव सिंह*	50
कबीर : सबद	*डॉ० वासुदेव सिंह*	150
कबीर : साखी	*डॉ० वासुदेव सिंह*	140
कबीर और अखा	*डॉ० रामनाथ घूरेलाल शर्मा*	80

योग, तंत्र, दर्शन

वाग्विभव	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200
वाग्दोह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200
गुप्त भारत की खोज	*पॉल ब्रंटन*	200
मारण पात्र (सत्य घटनाओं पर आधारित योग तांत्रिक कथा प्रसंग)	*अरुण कुमार शर्मा*	250
वह रहस्यमय कापालिक मठ	*अरुणकुमार शर्मा*	180
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी	*अरुणकुमार शर्मा*	180
मृतात्माओं से सम्पर्क	*अरुणकुमार शर्मा*	200
रावण की सत्यकथा	*रामनगीना सिंह*	60
प्राणमयं जगत	*अशोककुमार चट्टोपाध्याय*	22
भक्ति-सुधा	*करपात्रीजी महाराज*	50
श्रीभागवत-सुधा	*करपात्रीजी महाराज*	50
श्रीराधा-सुधा	*करपात्रीजी महाराज*	50
भ्रमर-गीत	*करपात्रीजी महाराज*	90
गोपी-गीत	*करपात्रीजी महाराज*	120
श्रीविद्या-रत्नाकर	*करपात्रीजी महाराज*	140
श्रीविद्या वरिवस्या	*करपात्रीजी महाराज*	70
श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या	*श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ*	50
श्री महागणपति वरिवस्या	*श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ*	60

साहित्यकार सावित्री परमार का निधन

ख्याति प्राप्त लेखिका और साहित्यकार **सावित्री परमार** का 3 अप्रैल की रात लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। वे 72 वर्ष की थीं। उनके लघु कथाओं और कविताओं के 15 संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हें रातस्थान साहित्य अकादमी का मीरा पुरस्कार व राजस्थान पत्रिका का क्रिएटिव पुरस्कार भी मिला था।

भारतीय वाङ्मय सदस्यता के लिए आवेदन पत्र

1. नाम (स्पष्ट अक्षरों में).....
2. पता.....
   पिन कोड..... फोन नं०.....
3. आयु..... 4. व्यवसाय.....
5. विशेष रुचि : कृपया बॉक्स में निशान (✓) लगाएँ—
   उपन्यास/कहानी ☐ कविता/शायरी ☐
   अध्यात्म/धर्म ☐ निबन्ध ☐
   आलोचना ☐ संस्मरण/जीवनी ☐
   इतिहास/संस्कृति ☐ राजनीति/पत्रकारिता ☐
6. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी के नाम 30/- रु० की राशि मनीआर्डर द्वारा भेजें।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **मई 2001** **अंक : 5**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

✆ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in